नूर और नूरतजल्ला, आकास जिमी सब नूर।
देत देखाई सब नूरै, नूर जहूर भर पूर।। १३७ ।।

अक्षरधाम और परमधाम की जमीन और आकाश सब नूर का है, इसलिए जहां तक नजर डालो दूर तक नूर ही नूर दिखाई देता है।

सब्द न अब आगे चले, जित पर जले जबराईल।
इत आवें रूहें अर्स की, जो होए अरवा असील।। १३८ ।।

अब आगे की शोभा वर्णन करने के लिए शब्द नहीं मिलते। यहां जबराईल फरिश्ता भी कहता है कि मेरे पर जलते हैं, आगे नहीं जा सकता। यहां पर परमधाम की रहने वाली असल रूहें ही आती हैं।

महामत कहे सुनो मोमिनों, ए अर्स नूरजमाल।
एही अर्स अजीम है, रहें इन दरगाह रूहें कमाल।। १३९ ।।

श्री महामतिजी जी कहते हैं, हे मोमिनो! सुनो यह अक्षरातीत नूरजमाल का घर है। इसी को अर्शे अजीम कहते हैं और इसी महल में अनोखी रूहें रहती हैं।

॥ प्रकरण ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ १९५६ ॥

नूर परिकरमा अंदर दस भोम ।। मंगला चरन ।।

बड़ीरूह रूहें नूर में, लें अर्स नूर आराम।
नूरजमाल के नूर में, नूर मगन आठों जाम।। १ ।।

श्री राजजी महाराज के नूर में आठों पहर श्री श्यामाजी महारानी और सखियां अखण्ड घर परमधाम में रात-दिन सुख में रहती हैं।

तिनका जरा सब नूर में, नूर जिमी बिरिख बाग।
नूर फल फूल पात नूर, रूहें निसदिन नूर सोहाग।। २ ।।

परमधाम के जरा से तिनके से लेकर जमीन, वृक्ष, बाग, फल, फूल, पत्ता सब नूर का ही है। जहां सखियां नित्य आराम से रहती हैं।

नूर किनार नूर जोए के, नूर जल तरंग।
नूर जल पर मोहोलातें, क्यों कहूं नूर के रंग।। ३ ।।

जमुनाजी का किनारा, जल की तरंगें, जल पर बनी मोहोलातें सब श्री राजजी महाराज के नूर की शोभा हैं। नूर के रंगों का कैसे बयान करूं?

नूर जिमी निकुंज बन, नूर जिमी जल ताल।
नूर टापू मोहोलात नूर, और नूर मोहोल बन पाल।। ४ ।।

कुंज, निकुंज, वन, जमीन, जल, हौज कौसर, तालाब, टापू महल और पाल के महल सब श्री राजजी महाराज के नूर की शोभा हैं।

नूर जल किनारे सीढ़ियां, नूर चबूतरा गिरदवाए।
नूर मोहोल मेहेराव फिरते, नूर झांई जल में बनराए।। ५ ।।

सागर के किनारे की सीढ़ियां, चबूतरा, महल, मेहराब जो घूमकर आए तथा वनों के, जल पर पड़ने वाले प्रतिबिम्ब सभी नूर के हैं।

Nijanand App

नूर जरे तिनके का, मैं नूर कह्या दिल धर।
नूर समूह की क्यों कहूं, रूहें नूर देखें सहूर कर।। ६ ।।

एक तिनके की रोशनी का मन में विचार करके वर्णन किया था। फिर जहां चारों तरफ हर चीज नूर ही नूर की है वहां रूह चित्त में विचार करके उसका अनुभव ही कर सकती है।

सुपेत जिमी नूर झलके, नूर आकास लग भरपूर।
नूर सामी आकास का, क्यों कहूं जोर जंग नूर।। ७ ।।

पाल के ऊपर की जमीन का नूर आकाश तक जगमगाता है जो सफेद रंग का है। उसकी किरणें आकाश की किरणों से टकराती हैं। जिनके नूर की शोभा कैसे कहूं?

नूर बाग हिंडोले रोसन, बिना हिसाबें नूर के।
हक हादी रूहें नूर में, नूर हींचें अर्स लगते।। ८ ।।

बगीचों के हिंडोले तथा बगीचों के नूर की शोभा बेहिसाब है। श्री राजजी, श्यामाजी और रूहें इन नूर के हिंडोलों में झूलती हैं जो रंग महल से लगते हैं।

हक बड़ी रूह हींचें नूर में, और रूहें नूर बारे हजार।
जोत नूर आकास में, नूर भर्‌यो करे झलकार।। ९ ।।

श्री राजश्यामाजी तथा बारह हजार रूहें जब नूर के झूलों में झूलती हैं तो इनकी झलकार नूरमयी आकाश में नहीं समाती।

खोल आंखें रूह नूर की, क्यों नूर न देखे बेर बेर।
क्यों न आवे बीच नूर के, ज्यों नूर लेवे तोहे घेर।। १० ।।

हे मेरी आत्मा! तू अपनी नूरी आंखें खोलकर ऐसी नूरमयी शोभा को बार-बार देखकर नूर में गर्क क्यों नहीं हो जाती?

ए रोसन करत कौन नूर की, नूर केहेत आगे किन।
केहेत है नूर किनका, नूर रूह केहे चली मोमिन।। ११ ।।

इस नूर की रोशनी को कौन किसके आगे, किसका नूर कहता है और मोमिन किसके नूर की बातें करते हैं?

देखो मोहोलातें नूर की, अंदर सब पूर नूर।
कहां लग कहूं माहें नूर की, नूर के नूर जहूर।। १२ ।।

नूर की मोहोलातों को देखो जिनके अन्दर सब नूर ही नूर की शोभा है। यहां की हर चीज नूर की है जिसकी शोभा कैसे कहूं?

सब चीजें इत नूर की, बिना नूर कछुए नाहें।
नूर माहें अंदर बाहेर, सब नूर नूर के माहें।। १३ ।।

महलों के अन्दर-बाहर सब चीजें नूर ही नूर की हैं। नूर बिना कुछ नही है।

Nijanand App

नूर नजरों नूर श्रवनों, नूर को नूर विचार।
नूर सेज्या सुख नूर अंग, नूर रोसन नूर सिनगार।। १४ ।।

जो कुछ दिखाई पड़ता है या विचार में आता है, सब श्री राजजी महाराज का ही नूर है। सेज्या के सुख, नूरी अंग के सिनगार सब नूर के हैं।

नूर खाना नूर पीवना, नूर मुख मजकूर।
इस्क अंग सब नूर के, सब नूर पूर नूर।। १५ ।।

खाना, पीना, बातें करना, अंग से इश्क का आनन्द लेना सब नूर के ही हैं।

गुन अंग सब नूर के, नूर इन्द्री नूर पख।
रीत रसम सब नूर की, प्रीत प्रेम नूर लख।। १६ ।।

गुण, अंग, इन्द्रियां, पक्ष (अंतःकरण), रीति, रस्म, प्रेम, प्रीति सब नूर के ही दिखाई देते हैं।

आसमान जिमी तारे नूर के, नूर चांद और सूर।
रंग रुत नूर वाए बादल, गाजे बीज नूर भरपूर।। १७ ।।

आसमान, जमीन, तारे, चन्द्रमा, सूर्य, रंग, ऋतु, हवा, बादलों का गर्जना, बिजली का चमकना, यह सब नूर की ही शोभा है।

मोहोल मन्दिर सब नूर में, झांखन झरोखे नूर।
द्वार दिवालें नूर सब, सब नूर हजूर या दूर।। १८ ।।

महल, मन्दिर, झांकने के झरोखे, दरवाजे, दीवारें, पास के हैं या दूर के, सब नूर के हैं।

थंभ दिवालें नूर की, नूरै के झरोखे।
नूर सरूप माहें झांकत, नूर सब नूर देखें ए।। १९ ।।

थंभे, दीवारें, झरोखे तथा उन झरोखों से देखने वाले स्वरूप सब नूर के हैं।

मोहोल मन्दिर सब नूर के, नूर मेहेराव खिड़कियां द्वार।
नूर सीढ़ियां सोभा नूर की, बीच गिरदवाए नूर झलकार।। २० ।।

महल, मन्दिर, मेहराब, खिड़कियां, दरवाजे, सीढ़ियां सब नूर ही नूर की चारों तरफ झलकार है।

कहा कहूं नूर नवे भोम का, नूर क्यों कहूं नूर बिसात।
नूर वस्तर कहे न जावहीं, तो क्यों कहूं नूर हक जात।। २१ ।।

रंग महल की नौ भोम, उनके अन्दर का साज-समान, वस्त्र, आभूषण तथा मोमिन जो श्री राजजी महाराज के अंग हैं, सब नूर के ही हैं।

रहें नूर सरूप पानी मिने, तो भीजें ना नूर तन।
नूर तन रहें जो आग में, तो भी नूर न जलें अगिन।। २२ ।।

श्री राजश्यामाजी और रूहें नूर के हैं यही स्वरूप जल में स्नान करते हैं या खेलते हैं, तो भीगते नहीं हैं। इसी तरह से नूरी तन आग में नहीं जलते।

Nijanand App

कहे हक नूर बैठ नासूत में, करें नूर लाहूत के काम।
नूर रूहें जिमी दुख में, लेवें नूर लाहूती आराम।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज का नूर मृत्युलोक में बैठकर नूरी परमधाम (लाहूत) का काम करता है। नूर की ही रूहें इस संसार में नूरी परमधाम का आनन्द लेती हैं।

दिल मोमिन अर्स नूर में, नूर इस्क आग जलाए।
एक नूर वाहेदत बिना, और नूर आग काहूं न बचाए।। २४ ।।

मोमिनों का दिल श्री राजजी महाराज का अर्श है जहां इश्क की आग जलती है। यह सब नूर का है। नूर की आग से केवल मोमिनों को छोड़कर कोई नहीं बचता।

कई गलियां नूर पौरियां, कई नूर चौक चौबट।
नूर बसे जो इन दिलों, तो नूर खुल जावे पट।। २५ ।।

गलियां, मेहराबें, चौक, चौराहा सब नूर के हैं। जिनके दिलों में नूर रहता है तो उनके लिए सब नूर के दरवाजे खुल जाते हैं।

नूर सीढ़ियां नूर चबूतरे, नूरै के थंभ दिवाल।
बीच खाली सोभा नूर की, ए नूर कहूं किन हाल।। २६ ।।

सीढ़ियां, चबूतरे, दीवारें, थंभे तथा बीच की जगह भी सब नूर की है। इस नूर का बयान कैसे करूं?

बाजे बासन सब नूर के, पलंग चौकी सब नूर।
नूर बिना जरा नहीं, नूर नूर में नूर जहूर।। २७ ।।

बाजे, बर्तन (पात्र) पलंग, चौकी सब नूर के हैं। नूर के बिना और कुछ नहीं है।

दसों दिसा सब नूर की, नूरै का आकास।
इन जुबां नूर बिलंद की, क्यों कहूं नूर प्रकास।। २८ ।।

दसों दिशाएं नूर की हैं। नूर का आकाश है। नूर बिलन्द (परमधाम) की शोभा यहां की जबान से कैसे कहूं?

बाग जंगल राह नूर के, पसु पंखी नूर पूर।
ख्वाब जिमी में नूर अर्स की, नूर जुबां कहा करे मजकूर।। २९ ।।

बगीचे, जंगल, रास्ते, पशु, पक्षी सब नूर के हैं। इस सपने की जमीन में बैठकर नूरमयी धामों के नूर का वर्णन जबान कैसे करे?

होत नूर थें दूजा बोलते, दूजा नूर बिना कछू नाहें।
एक वाहेदत नूर है, सब हक नूर के माहें।। ३० ।।

और बात जो कुछ भी करते हैं, वह सब नूर की ही होती है। नूर के बिना और कुछ नहीं है। पूरा परमधाम श्री राजजी महाराज के नूर का ही नूर है।

नूर कहे महामत रूहें, देखो नजरों नूर इलम।
वाहेदत आप नूर होए के, पकड़ो नूरजमाल कदम।। ३१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे रूहो! नूर इलम लेकर नूरी नजर से स्वयं नूरमयी होकर नूरजमाल के नूरी चरणों को पकड़ो।

॥ प्रकरण ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ १९८७ ॥

Nijanand App